International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(4): 13-15

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(4): 13-15
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 25-03-2015
Accepted: 19-04-2015

डॉ. शुचिता दलाल
विभागप्रमुख ,स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजनागपूर विद्यापीठ

Correspondence
डॉ. शुचिता दलाल
विभागप्रमुख ,स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजनागपूर विद्यापीठ

भारतीय संस्कृत काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों के अनुवाद तथा शैक्षणिक क्षेत्र की कुछ समस्याए

डॉ. शुचिता दलाल

प्राचीन पण्डित किसी शास्त्रार्थ में किसी मुद्देपर असहमत प्रकट करके –अनुवाद करके –दुसरे का मत दुहराकर अपना मत सिद्ध करनेका प्रयास करते है।यही उनका पुनःकथन या अनुवाद है। संस्कृत में अनु उपसर्ग +वद् धातु + घञ् भाव यह अनुवाद की मूल व्युत्पत्ती है।[1] संस्कृत की इस प्रविधि का स्वीकार हिन्दी भाषिक विद्वानों ने भी किया है।इसे भाषान्तर भी कहा जाता है। अंग्रेजी में जतंदेसंजपवद यह शब्द प्रख्यात है।किन्तु प्रादेशिक भाषा में अनुवाद तथा भाषान्तर दोनों ही शब्दोंका प्रयोग किया जाता है।

संस्कृत काव्यशास्त्रीय ग्रंथों के अनेक अनुवाद संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, प्रादेशिक भाषा में उपलब्ध हैं।इन ग्रंथो का अध्ययन करत वक्त भारतीय संस्कृत काव्यशास्त्रीय ग्रंथो के अनुवादयुक्त ग्रंथोंकी भिन्नतासे मैं प्रभावित हुई।

अनुवादित ग्रंथो के कुछ भेद इस प्रकार प्राप्त होते है–

1.मूल संस्कृत संहिता का भाषान्तर

उदा.–'अभिनयदर्पण' की मूल संस्कृत संहिता तथा उसका हिन्दी भाषान्तर

2. मूल संस्कृत संहिता–सटीप

उदा. पं. जगन्नाथ जी का रसगंगाधर, अनुवादक–प्रो.रा.ब.आठवले [3]

3. मूल संस्कृत संहिता–व्याख्या –सटीप

उदा. 'ध्वन्यालोक' लोचन टीका तथा टिप्पणी – सम्पादक–प्रा. मा.वा. पटवर्धन [4]

4. मूल संस्कृत संहिता– संस्कृत व्याख्या[5]– हिन्दी या प्रादेशिक व्याख्यानुवाद

उदा. पं. जगन्नाथ जी का रसगंगाधर, संस्कृत व्याख्या डॉ.श्री नारायण मिश्र तथा हिन्दी अनुवाद डॉ. शशिनाथ झा। रसतरंगिणी_संस्कृत व्याख्योपेतः।'यह उसका प्रारंभ है।

इसप्रकार अनुवादित ग्रंथों में 1.मूल संस्कृत संहिता 2 टिप्पणी 3. व्याख्या 4 व्याख्याओंकाभी अनुवाद संस्कृत क्षेत्र में एक अलग स्थान है।

स्रोतभाषा या मूलभाषा तथा लक्ष्यभाषा ये अनुवाद के दो प्रमुख तत्त्व है। स्रोतभाषा या मूलभाषा को वनतबम संदहनंहम ;स्द्धकहते है,तथा लक्ष्यभाषा को ज्तहमज संदहनंहम;ज्स्द्ध कहते हैं।

मूल संस्कृत संहिता में संस्कृत यह स्रोतभाषा है, तथा संस्कृत में ही उसका अनुवाद है,तो वह लक्ष्यभाषा है।

दुसरे उदा. से यह अधिक स्पष्ट करना चाहते है।'दशरूपक विधान ' नामक ग्रंथमें भरतमुनी के नाटयशास्त्र 18 तथा 19 क्रमांकके अध्यायोंका 'अभिनवभारती ' टीकासहित मराठी में भाषांतर है। उसके भाषांतरकार प्रा.र.पं.कंगले जी है।इसमे संस्कृत मूल स्रोतभाषा है, मराठी लक्ष्यभाषा है। अतः भाषांतरकारको स्र व ज्स्र दोनोंही भाषाओंमें प्रभुत्व होना आवश्यक है। इसमे संस्कृत मूल स्रोतभाषा है, मराठी लक्ष्यभाषा है। इस ग्रंथमें प्रा.र.पं.कंगले जी का दोनोंही भाषाओंमें प्रभुत्व स्पष्टतया प्रतीत होता है। अतःअनुवादक की दृष्टि से स्र व ज्स्र चाहे वो किसी भी भाषा में हो प्रभुत्व होना आवश्यक है।

अनुवादक स्वयं अपनी ज्ञानबुद्धिसे प्रभावित होकर अपनामत प्रकट करता ळें भारतीय संस्कृत काव्यशास्त्रीय ग्रंथो के टिप्पणी या व्याख्या या सम्पादन से लेखक अपनी भूमिका स्पष्ट करते है। इस संदर्भ में भरतमुनीके प्रसिद्ध सूत्र से यह अधिक स्पष्ट होता है।'' विभावानुभावव्यभिचारि संयोगात् रसनिष्पत्तिः''। इस सूत्रसे 'संयोग' तथा निष्पत्ति' के विभिन्न अर्थ व्याख्याकारोंनें किए है। भट्टलोल्लट की रसोत्पत्ती, श्रीशंकुक की रसानुमिति, भट्टनायक की रसनिश्पत्ति और अभिनवगुप्त की रसाभिव्यक्ति प्रख्यात है। इसप्रकार अनुवाद में शब्द के प्रतिषब्द का स्थान,मूलग्रंथों का अर्थ निर्भर करता है। अनुवादकोंने यह गंभीरता समझनी चाहिए।

अनुवाद : प्रविधि , शैली तथा स्तर

वर्ण,शब्द,अर्थ,शब्दोंका रूपान्तर, वाक्यरचना,वाक्यांश या मुहावरे और शैली यह कुछ तत्त्व अनुवादशास्त्रोंज्ञोंने माना है।[8] संस्कृत काव्यशास्त्र के विविध ग्रंथो के रचयिता डॉ.नगेन्द्रजीने वर्ण, पद, वाक्य ये भाषाके तीन तत्त्व माने है। अर्थात अनुवादशास्त्रज्ञ तथा संस्कृत काव्यशास्त्रज्ञों के भाषाशास्त्र के तत्त्वों में कोई अंतम नही था। बल्की संस्कृत काव्यशास्त्र के आधारपरही अनुवादशास्त्रोंज्ञोंने अनुवाद प्रविधि को स्वीकृत किया है,यह कहना अनुचित नही होगा। विभिन्न वर्णों के वर्णों का संयोजन –वियोजन यह वर्ण विन्यास है। इसी में छन्द इत्यादिका समावेश होता है। काव्यशास्त्र का मूल आाधार व्याकरण है।[9]अतः सुबन्त–तिङ्न्त से पद का संबंन्ध होता है।[10] कारक ,वचन,लिङ्ग इ. के विशिष्ट प्रयोग शब्दरूपमें आते है।कुंतकने ' पदपूर्वार्ध वक्रता' याने सुबन्त अथवा तिङ्न्त का जो प्रातिपादक अथवा धातुरूप है,उसकी वक्रता,वक्रभाग अर्थात विशेष ढंग की रचना का वैचित्र्य है।(पृ.क्र. 64 वक्रोक्तिजीवितम्) । उदा. 'रामोऽस्मि' –यह उक्ती कुम्भकर्ण या विभिषण की है, इसपर टीकाकारोंके भेद है।(कुन्तक ने स्वयं संज्ञा , सर्वनाम, विषेशण**,** क्रियापद, कारक, वचन,लिङ्ग आदि के वक्र प्रयोग से उत्पन्न चमत्कार का अत्यन्त मार्मिक विश्लेषण किया है।[12] पृ.क्र.25 ,नगेन्द्र). काव्यसौंदर्य वाक्यसंरचनापर आधारित होता है। अतः कर्ता,कर्म,क्रिया का क्रम ,विषेशण ,क्रिया विषेशण का क्रम अनुवादक समझे तो काव्य की महत्ता या सौंदर्य अनुवाद में भी आ सकता है। अतः अनुवादार्थ स्रोतभाषा या मूलभाषा तथा लक्ष्यभाषा के लिए काव्यशास्त्र के प्रमुख आधार का अध्ययन आवश्यक है।

पद,वाक्य,वर्णयोजना तक ही अर्थ की व्याप्ती होती है। वाक्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यङ्यार्थ यह अर्थ के तीन भेद काव्यशैलीमेभी समाविष्ट होते है।अतः अनुवादमें शब्द, अर्थ, पद, शब्दरूपांतर, वाक्यांश आदि सभी के अंतर्भाव, तत्त्वों का अध्ययन अनुवादकको करना आवश्यक है। काव्यशास्त्रबिना अनुवाद होना असंभवनीय है। विशेषतः संस्कृत काव्यशास्त्र के अनुवादकांको तो यह अपरिहार्य है।

शैली का संबंध स्रोतभाषा तथा लक्ष्यभाषा से भी निकट है। वामन के 'विशिष्टपदरचना रीतिः' यह तो प्रादेशिक लक्ष्यभाषा से बहोतही संबंधित है। वैदर्भी, गौडी, पा०चाली यें रीतिंके तीन प्रकार है।अतः प्रादेशिक़दृष्टिसे संबंधित लक्ष्यभाषोंका सखोल अध्ययन अच्छे अनुवाद के हेतू अनिवार्य है।यह रीतिंयों के शब्दार्थोंमें गुण विराजमान रहते है, उसमे भी वैदर्भी में तो सभी गुण समाविष्ट है। इतनाही नही दोष, अलंकार की भी स्थापना रीतीमें होती है। अतः स्रोतभाषा तथा लक्ष्यभाषा हेतू काव्यशास्त्र के संपूर्णतया अध्ययनसेही काव्यशैलीके तत्व में अनुवादक को दृढता प्राप्त होगी,इसतर कोई संदेह नही। अगर यह सत्यतया होता है तो मूल ग्रंथों के समान अनुवाद भी अतुलनीय होगा।

अनुवादग्रंथों का स्तर इसी शैली तर आधारित है। अनुवादशास्त्रज्ञों ने स्तर संबंधित परिभाषाएॅ दी है।

1. स्रोतभाषा का भाव सुरक्षित रहना आवश्यक है।
2. लक्ष्यभाषा की संरचना व शैली का निर्वाह
3. स्रोतभाषा के रचना की शैली का निर्वाह

इन परिभाषाओं सें अनुवादों में शैली निर्वाहार्थ काव्यशास्त्र की उपयुक्तता स्पष्टतया प्रतीत होती है।

अनुवाद की समस्याएॅ

ललितकाव्य की अनुवाद समस्याएॅ तथा काव्यशास्त्र की अनुवाद समस्याओंमें बहुतांष भेद है। ललितकाव्य के अनुवादमें अगर संस्कृत ही लक्ष्यभाषा है,तो शायद अन्य भाषाओं के समान यह समस्याए नही होती।क्योंकी मूलभाषा तथा प्रादेषिक लक्ष्य भाषातें ह्स्व दीर्घ, शब्द ,उसका अर्थ, चिन्हव्यवस्था इ. सभी समस्याएॅ हो सकती है।जैसे संस्कृत में माला ,नदी , गौरी यह दीर्ध है, तो द्राविड में वे ह्स्व है।मति, रुचि ब्द संस्कृत में इकारान्त ,तो हिन्दी तें यही शब्द दीर्घ ईकारान्त है।परन्तु संस्कृत काव्याास्त्रीय विद्वानोंको तथा भाषा विद्वानोंको को यह समस्याए नही होती।

शास्त्रीय ग्रंथों की अनुवाद समस्याए अलग है। पहिलेही इस निबंध में अनुवाद के शास्त्रीय दृट्या चार भेद हमने बतलाए है। जैसे प्रथम में केवल भाषान्तर वहा लक्ष्यभाषा संस्कृत ही हो सकती है। कुछ अनुवादोंमें मूलभाषा संस्कृत तथा लक्ष्यभाषा अंग्रेजी या प्रादेषिक होती है। शायद ललितकाव्य की अनुवाद समस्याए इस प्रथम प्रकारकी हो सकती है। दुसरे भाग में कंसमें या विवरणात्मक वाक्य लिखना आवश्यक होता है। तिसरे प्रकार में सटीक तथा व्याख्या दोनोंकाही समावेष है। अतः संस्कृत हे विद्वानोंके लिए यह समस्या नही है। किन्तु आजके सभी संस्कृत जिज्ञासुओंके लिए तथा शिक्षका ंके लिए यह एक समस्या ही है।

क्योंकी केवल शब्दषः अर्थ से शास्त्रीय वाक्य का भावार्थ या मर्मसिद्धान्त ज्ञात नही होती। पाठकों की यह समस्या ज्ञान में रखते हुएरसगंगाधर के मराठी अनुवादक प्रो.रा.ब.आठवलेजी का विघविधान श्रवण्सयोग्य है। वे लिखते है–

'' अनुवाद करीत असतांना मला असे आढळून आले की या ग्रंथाचा नुसता शब्दषः अनुवाद केल्याने काम भागणार नाही. अभ्यासकाला ग्रंथाचे मर्म समजायचे असेल तर अनुवाद षब्दषः करून शिवाय वारंवार अनेक स्थळी कंसात विवरणात्मक वाक्ये लिहिणे भाग आहे. तेव्हा त्याप्रमाणे अनुवादाबरोबरच मधून मधून मी कंसात विवरणे लिहू लागलो.पण एवढयानेही काम भागेना. कारण ग्रंथात याणार्या शास्त्रीय पारिभाषिक पदार्थाचे विवेचन कंसात करणे शक्य नाही,असे दिसून आले.विषेशतः पद्यांचा अनुवाद करताना मार्मिक टीपा जोडणेही इष्ट वाटले. त्यामुळे अषा व इतर महत्वाच्या ठिकाणी अनुवादानंतर मी छोटया व मोठया टीपा जोडल्या आहेत.''

पं. जगन्नाथ जैसे रसगंगाधर का अनुवाद करना इतना आसान नही था। अतः के रसगंगाधर मराठी अनुवादक प्रो.रा.ब.आठवलेजी को मै सलाम करती हू। यह ग्रंथ 1953 तें प्रकाशित हुआ है।इसका मतलब यही है की शिक्षक –छात्र – संशोधक इनकी समस्याए दूर करने का प्रयाास सौ साल से पहले भी किया जाता था।

ग्रंथ के अंतर्गत की समस्याए तो अनुवादक, सम्पादक तथा व्याख्याकार जानते थे। पर उसकी बर्हिसमस्याए तो इन्हे नाराज करती थी। एक तो प्रकाशक प्राप्त होना, उसके लिए आवश्यक व्यय मिलना सब कठिन था। [18] ''आता कुणीअहाभाग भेटला तरच पुढील खण्ड प्रकाशित होणार'' यह आठवलेजी का वचन ॅदयस्थ दुःखी होता है।

तिसरी समस्या है प्रकाशकोंकी। आज हे युग में झेराक्स नामक फंडा है। पुस्तकविक्रेता के सिवाय धर में बैठकर यह विक्रेता का कार्य चलता हैं। छात्रोंको महत्वपूर्ण पुस्तके या ग्रंथ जज्दी प्राप्त नही होते, तब उन्हे झेराक्स

निकालना अनिवार्य होता है। या घरेलू विक्रेंतासे वह अपना कार्य निभाते है। पर अनेकदा ग्रंथ के मुखपृठ की भी झेराक्स निकाली नही जाती। इसलिए ना तो लेखक ,प्रकाशक ,अनुवादक का पता चलता, नाही कुछ पाठकोंको उसका महत्व समझता।संस्कृत भाषा के लिए तो यह दुर्भाग्य है।इस झेराक्सके कारण लेखक ,प्रकाषक ,अनुवादक का नुकसान ही होता है।पर इसमें बच्चोंको या छात्राओं को भी दोषी नही ठहरा सकते । वयोंकी ग्रंथ का मूल्य , समयपर आवश्यक ग्रंथ उपलब्ध न होना ,यह समस्याओं के कारण उनका वर्तन होता है।

इस दुवर्तन सुलझाने कुछ उपाय हम प्रस्तुत करते है।–

1.भारतीय संस्कृत ग्रन्थों के अनुवाद सटीक तथा व्याख्या सहित होने चाहिए।

2. संस्कृत शास्त्रीय ग्रन्थों का प्रकाशन बडी बडी संस्थाओंने करनी चाहिए।

3. जिस तरह गोरखपूर या अंग्रेजी के बुक्स बहोत ही साधारण किमत पर प्राप्त होते है, उसी प्रकार अगर संस्कृत के बुक्स भी प्राप्त होते ,तो शायद संस्कृत यह समस्याएॅ दूर होती।

प्रस्तुत निबंध में 1. अनुवाद के प्रकार

2.. स्रोतभाषा या मूलभाषा तथा लक्ष्यभाषा का महत्व

[3]अनुवाद के तत्व तथा षैली 4.समस्याए

5. उपाय सादर किए है।

संदर्भ–

1. अनुवााद :भाषाए समस्याए– एन.ई.विष्वनाथ अय्यर, पृ.क्र.72, प्रकाशक –ज्ञानगंगा दिल्ली.110006
2. भारतीय नाटय परंपरा और अभिनयदर्पण – वाचस्पति गैरोला ,1989,चौखम्बा प्रकाशन,वाराणसी पृ.क्र.7191,262
3. रसगंगाधर– पं. जगन्नाथ ,मराठी अनुवादक प्रो.रा.ब. आठवले,1953, पृ.क्र.72, प्रकाशक– टिळक महारा विद्यापीठ,पुणे. 4.
4. रसगंगाधर– पं. जगन्नाथ, संस्कृत व्याख्या डॉ.श्री नारायण मिश्र तथा हिन्दी अनुवाद डॉ. शशिनाथ झा। रसतरंगिणी संस्कृत व्याख्योपेतः।'चौखम्बा प्रकाशन,वाराणसी
5. ध्वन्यालोक– संपादक पु.ना.वीरकर,मा.वा.पटवर्धन,महाराष्ट राज्य साहित्य आणि संस्कृति मंडळ,मुंबई 1989
6. 'दषरूपक विधान' महाराष्ट राज्य साहित्य आणि संस्कृति मंडळ,मुंबई 1974
7. अनुवाद :भाषाए समस्याए– एन.ई.विश्वनाथ अय्यर, पृ.क्र.66, प्रकाशक –ज्ञानगंगा दिल्ली.110006
8. अनुवााद :भाषाए समस्याए– एन.ई.विश्वनाथ अय्यर, पृ.क्र.27, प्रकाशक –ज्ञानगंगा दिल्ली.110006
9. शैली विज्ञान– नगेन्द्र ,पृ.क्र.25, प्रकाशक –नशनल पब्लिक हाउस ,दिल्ली
10. शैली विज्ञान– नगेन्द्र ,पृ.क्र.56 प्रकाषक –नशनल पब्लिक हाउस ,दिल्ली
11. वक्रोक्तिजीवितम् –कुन्तक– चौखम्बा प्रकाशन,वाराणसी पृ.क्र. 64
12. शैली विज्ञान– नगेन्द्र ,पृ.क्र.25 प्रकाशक –नशनल पब्लिक हाउस ,दिल्ली
13. काव्यालंकार सूत्र–वामन, चौखम्बा प्रकाशन,वाराणसी
14. काव्यालंकार सूत्र–वामन, चौखम्बा प्रकाशन,वाराणसी
15. अनुवाद :भाषाए समस्याए– एन.ई.विष्वनाथ अय्यर, पृ.क्र.65, प्रकाशक –ज्ञानगंगा दिल्ली.110006
16. रसगंगाधर– पं. जगन्नाथ ,मराठी अनुवादक प्रो.रा.ब. आठवले,1953, अनुवादकाचे किंचित् प्रास्ताविक, प्रकाशक– टिळक महारा विद्यापीठ,पुणे. 4.
17. रसगंगाधर– पं. जगन्नाथ ,मराठी अनुवादक प्रो.रा.ब. आठवले,1953, प्रकाशक– टिळक महारा विद्यापीठ,पुणे. 4.
18. रसगंगाधर– पं. जगन्नाथ ,मराठी अनुवादक प्रो.रा.ब. आठवले,1953प्रकाशक– टिळक महारा विद्यापीठ,पुणे. 4.